नानेशवाणी-19

ज्योतिर्मय की ज्योतिर्धारा

प्रकाशक

साधुमार्गी पब्लिकेशन

नानेशवाणी भाग - 19

ज्योतिर्मय की ज्योतिर्धारा

आचार्य श्री नानेश

प्रथम संस्करण : सितम्बर 2003, 1100 प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण : अप्रैल 2011, 1100 प्रतियाँ
तृतीय संस्करण : जुलाई 2016, 1100 प्रतियाँ
चतुर्थ संस्करण : अगस्त 2019, 1500 प्रतियाँ

मूल्य : 80/-

प्रकाशक :

साधुमार्गी पब्लिकेशन

अन्तर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड,
रेलवेशहर-बीकानेर - 334401 (राज.) दूरभाष : 0151-2290261
visit us : www.shrisbsjainsangh.com
e mail : absjsbkn@yahoo.co.in

मुद्रक :
तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
दूरभाष 9314962474/75

प्रकाशकीय

हुक्मगच्छ के अष्टमाचार्य युगपुरुष समता विभूति आचार्यश्री नानेश विश्व की उन विरल विभूतियों में से एक रहे जिन्होंने अपने कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व से समाज को सम्यक् जीवन जीने की वह राह दिखायी जिस पर चलकर भव्य आत्माएँ अपने कर्मों का क्षय कर मोक्ष पथ की अधिकारिणी बन सकती हैं। यद्यपि आचार्यश्री नानेश के भौतिक व्यक्तित्व का अवसान हो चुका है लेकिन उनके द्वारा रचित साहित्य के रूप में हमारे पास एक बहुत बड़ी निधि उपलब्ध है। निश्चित ही आचार्यश्री नानेश ने अपने विचारों से सम्पूर्ण समाज में जन चेतना की जो रश्मियाँ प्रवाहित की हैं वे युगों-युगों तक जनमानस का पथ प्रदर्शित करती रहेंगी।

आचार्यश्री नानेश का यह दिव्य साहित्य जन-जन तक पहुँचे एवं सर्व सुलभ हो इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने इन अनमोल साहित्यिक धरोहर को नानेशवाणी पुस्तक शृंखला के अन्तर्गत प्रकाशित करने का निर्णय लिया। आज उन्हीं सुप्रयासों का सुफल है कि नानेशवाणी भाग 1 से 52 तक प्रकाशित हो सकी है।

समय परिवर्तन के साथ संघ ने नानेशवाणी के प्रकाशन को नवीन स्वरूप देने का निर्णय लिया। उसी के अनुरूप उपरोक्त पुस्तक को पूर्व की अपेक्षा और अधिक श्रेष्ठ स्वरूप देने का प्रयास किया गया है ताकि इस पुस्तक की महत्ता के साथ आवरण सज्जा में और अधिक निखार आ सके। इसी क्रम में नानेशवाणी भाग - 19 **'ज्योतिर्मय की ज्योतिर्धारा'** का चतुर्थ संस्करण आपके हाथों में है।

मैं संघ एवं अपनी ओर से इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोगी बने समस्त आत्मीयजनों का आभार प्रकट किये बिना नहीं रह सकता जिनके सहयोग से ही यह भागीरथी कार्य सम्पन्न हो सका सम्पादन में आचार्य-प्रवर के मूल भावों को सुरक्षित रखने का पूर्ण प्रयास किया गया है। अज्ञानवश यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उनके लिए हम हृदय से क्षमाप्रार्थी हैं।

संयोजक

साधुमार्गी पब्लिकेशन

संघ के प्रति अहो भाव

हे पितृ तुल्य संघ! हे आश्रयदाता संघ!

संसार के प्रत्येक जीव की रक्षा के लिए सतत प्रयत्नरत संघ! तुम्हारी शीतल छांव तले हम अपने परिवार के साथ तप-त्याग से युक्त आध्यात्मिक, सुखद जीवन जी रहे हैं। तुम्हारे ही आश्रय में रहकर हमने अपने नन्हें चरणों को आध्यात्मिकता की दिशा में बढ़ाया है। तुमने ही हमें आत्मा के अन्वेषण हेतु प्रेरित किया। तुम्हारी ही प्रेरणा से प्रेरित होकर हमने अपने जीवन को सन्मार्ग की ओर बढ़ाया है। इस हेतु हम संघ का अभिवादन करते हैं।

संघ ने हम अकिंचन को इस पुस्तक 'ज्योतिर्मय की ज्योतिर्धारा' नानेशवाणी भाग- 19 के माध्यम से सेवा का अनुपम अवसर प्रदान किया। इस हेतु हम अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं। अन्तर्भावना से संघ का आभार व्यक्त करते हुए यह विश्वास करते हैं कि भविष्य में भी परम उपकारी श्री संघ शासन हमें सेवा का अवसर प्रदान करता रहेगा।

अर्थ सहयोगी

श्रीयुत भोमराज राजेशकुमार गुलगुलिया, सिलचर
(असम)

अनुक्रमणिका

पाप और पुण्य की मीमांसा	:	7
मोक्ष तक पहुँचानेवाले सोपान	:	21
ज्ञानोपयोग का अभ्यास	:	33
भाव और द्रव्य त्याग	:	46
संघ, साधु और समाधि	:	58
सेवा–धर्म की गहनता	:	69
प्रतिक्रमण, परिमार्जन एवं प्रत्याख्यानि	:	84
मार्ग–प्रभावना : जीवन की साधना	:	97
प्रवचन–वात्सल्य की प्रखरता	:	110
पर–निन्दा सम पातक नहीं	:	122
पंचमकाल का भविष्य–दर्शन	:	133
ज्योतिर्मय की ज्योतिर्धारा	:	150
समता का परम आदर्श	:	164
बन्धन और मुक्ति के मार्ग	:	178
आश्रवों के द्वार बन्द करें	:	191
संवरण का नाम संवर	:	204
कठोर व कोमल वृत्तियों का केन्द्र	:	215
योग साधना का सच्चा अर्थ	:	227
उत्तम क्षमा की उत्कृष्टता	:	240
जीतना है, तो क्रोध को जीतिए	:	253